धर्म जीवन

नवम्बर 2005

- ✡ महोत्सव मुबारक
- ✡ पाप और पाप बोध
- ✡ क्षमा का महत्व
- ✡ कुछ ऐसी ही थी मेरी माँ
- ✡ शास्त्री जी
- ✡ अण्डों सम्बन्धी भ्रांतियां
- ✡ श्रद्धांजली सभा
- ✡ सत्य मोक्ष और जीवन दायनी देव गंगा
- ✡ शुभ संग्राम

परम पू० भगवान देवात्मा का 155 वां
(महोत्सव मुबारक)

जैसा कि पहले सूचित किया जा चुका है परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म महोत्सव बिल्कुल निकट आ रहा है। इस साल यह परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा का 155 वां शुभ जन्म महोत्सव है। यह हर साल कि तरह इस वर्ष भी पूरी श्रद्धा और चाव भाव से 14 दिसम्बर से 17 दिसम्बर 2005 को चण्डीगढ़ 18 डी धर्मशाला में पूरी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस वर्ष महोत्सव मुबारक के दिन बुद्धवार, वीरवार, शुक्रवार, शनिवार के होंगे।

सब साथी सेवकों व अन्य सम्बन्धित जनों से निवेदन है कि वह इस शुभ अवसर पर अवश्य पधारें और अभी से ही इस सम्बंध में तैयारियां शुरू कर दें और अपनी छुट्टी आदि का प्रबंध निश्चित कर लें।

16 नवम्बर को परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में खास साधनों के दिन आरम्भ होते हैं। इस आरम्भिक दिन को भी पूरे चाव व उल्लास के साथ जगह जगह मनायें।

महोत्सव से लाभ उठाने के लिए अपने हृदयों को भी तैयार करने का खास साधन करने का ख्याल रखें। अभी से परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा के आद्वितीय जीवन के सम्बंध में पाठ और विचार अवश्य शुरू कर दें। जीवन कथाएं, आत्मकथा, मुझ में देव जीवन का विकास (भाग 1, भाग 2) और अद्वितीय त्यागों का पाठ विशेष तौर पर उपयोगी और हितकर हो सकता है।

इतवार के दिन पूजा के साधनों से पहले हालात अनुसार प्रभात फेरियां निकालने या देवात्मा की महिमा के गीत गाने का साधन हो सकते हैं।

गुरु महाराज और उनकी समाज से जुड़कर अपना वा अपने पारिवारिक जनों का जो सच्चा हितसाधन हुआ है, उस पर चिन्तिन और उपकार स्मरण करने और लिखने का साधन करके अपना भला करें।

दूसरों से भगवान की महिमा का ब्यान करके उन्हें महोत्सव से लाभ उठाने के लिए तैयार करें। दूसरों से पाप छुड़ाने का साधन आदि करने और उन तक समाज की पुस्तकें और पत्रिकाएं पहुंचाने की सेवा करके अपना भला करें।

सच्चा सेवक, सच्चा श्रद्धावान सेवक कभी किसी कीमत पर भी इस शुभ अवसर से वंचित नहीं रहना चाहेगा क्योंकि यह बात हमारी सेवकी की प्रतिज्ञा में भी शामिल है। अभी से अपने परिवार को व और जनों को इस शुभअवसर से लाभ उठाने के लिए हितकर संग्राम शुरू कर दें। अपने हालात के अनुसार नए वस्त्र बनवाने का प्रबंध करें और विशेषकर एकाकारी भी तैयार कर रखें।

यह शुभ अवसर अत्यंत हितकर और अद्वितीय अवसर है। इस शुभ अवसर पर जो रोशनी और तेज भरे प्रभाव वितरण होते हैं, वह सारे संसार से अद्वितीय वस्तु हैं। उन प्रभावों से हमारा हित अटल रूप से जुड़ा हुआ है। अब तक या आंयदा जो हमारा हित हुआ है या होगा वह इन्हीं महा-दुर्लभ प्रभावों के कारण ही है। कोई अनुमान नहीं लगा सकता कि किस को कितना लाभ हो सकता है। हमारे जीवनों के तख़्ते ऐसे ही महादुर्लभ अवसरों द्वारा ही पलटे हैं।

इसलिए बार बार यह नम्र निवेदन है कि हम में से कोई भी जन इस महा-सौभाग्य के अवसर से वंचित न है।

धन्यवादी होंगे।

मंत्री

धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 7

नवम्बर 2005

वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

पाप और पाप बोध

हमारी धर्म समाज में एक भजन बहुत प्रसिद्ध है, जिसमें आता है

''पाप का बोध मैं पाऊं, न पर हानि कभी चाहूं।
मैं हितकर जीव बन जाऊं यही हो कामना मेरी''

इन पंक्तियों से यह सिद्ध होता है कि पाप के साथ अपनी और दूसरों की हानि अवश्य होती है। हम उपरोक्त पंक्तियां अक्सर गाते हैं, परन्तु हमारे भीतर यह प्रश्न नाम मात्र ही उठता है कि पाप क्या और पाप का बोध क्या? हमारे ऐसे कर्म, अमल वा गतियां जो हमारे लिए व दूसरे अस्तित्वों के लिए हानिकारक हैं, पाप कहलाते हैं।

अब हमारे लिए यह जानना अवश्यक है कि पाप के स्रोत व कारण क्या हैं? नेचर के भीतर कोई क्रिया , कोई गति शक्ति के बिना नहीं होती। हमारे भीतर नीच सुख लालसाओं के आर्कषण की बहुत प्रबल शक्तियां भरी पड़ी हैं। यह सुख लालसाएं वा हमारे नीच सुखों के इश्क अपनी तृप्ति के लिए जब हरकत में आते हैं तो मनुष्य को पाप मूलक क्रियाएं करने के लिए विवश कर देते हैं।

एक-एक नशे का सुख मनुष्य को वहशी बना देता है, वह ऐसे घिनौने पाप कर बैठता है कि जिसका अनुमान उसे स्वयं भी नहीं होता। कुछ दिन हुए चण्डीगढ़ के निकट एक शराब के नशे में धुत जन 11-12 बजे घर में आया, पत्नी ने शराब का विरोध किया, तो उसे मोटी लकड़ी से मार-2 कर खत्म कर दिया, फिर 2-3 बच्चे सोए हुए थे, उन्हें भी उसी प्रकार मार कर मौत के घाट उतार दिया, अपने ही प्यारों की लाशों को बिछाकर स्वयं जाकर थाने में पेश हो गया। एक-एक नशे का आर्कषण मनुष्य से किस प्रकार के घिनौने पाप करवाता है। एक नशे के आर्कषण से ही मनुष्य अपने धन, अपनी इज्जत, अपनी सेहत, अपनी उमर, अपने सम्बन्धों और अपने काम धन्धे को अथाह हानि पहुंचाता है, इसीलिए यह महा-पाप है। आत्मा की जो हानि होती है, उसकी तो सोच भी उसे नहीं आ सकती।

सैक्स के अनुचित आकर्षण से प्रतिदिन अख़बार भरे होते हैं। दो-दो और चार-2 साल की बच्चियों से बलात्कार और फिर उनका कत्ल किस कदर पाप की भयानक गतियां हैं। इन पाप मूलक गतियों से भी सेहत, उमर, धन, जान की महा-हानि होती है। तख़्त छूट जाते हैं, एक-एक धनवान सेठ नाचने वाली के कोठे पर हुक्का भरता मर जाता है, एक-2 ऊंचा पद-धारी अपनी पदवी को भूलकर अपना घर-परिवार छोड़कर, जीते हुए ही पत्नी को

विधवा व बच्चों को अनाथ करके, एक-एक औरत के आकर्षण में उसी की चौखट पर उमर व्यतीत कर देता है। सैक्स के अनुचित आकर्षण से एक-2 जन अपने कर्तव्य कर्मों की अवहेलना करके जो अन्याय वा जुल्म करता है, जो अपनी व दूसरों की हानि करता है, एड्स जैसे महा रोग में ग्रस्त होकर जो नर्क की ज़िन्दगी व्यतीत करता है, उसकी अनगिणत उदाहरण देखने को मिलते हैं।

धन कमाना मनुष्य के आत्म सम्मान व उसके जीने के लिए अवश्यक है, परन्तु इसका अनुचित आकर्षण जब बढ़ जाता है, तो मनुष्य को चोर, दूसरों का हक अपहरण करने वाला, कातिल, जूए बाज़, बईमान, धोखेबाज, कंजूस रिश्वत खोर बना देता है। पू. भगवान ने पू. देवशास्त्र में धन अनुराग से ही 40 प्रकार के होने वाले पाप कर्म बताए हैं। धन अनुराग से मनुष्य अपनी व दूसरों की हानि करता है, इसीलिए यह पाप है। धन के बन्धन से मनुष्य अपना व अपनी सन्तान का घोर शत्रु बन जाता है।

इसी प्रकार मोह के अनुराग से अपनी व दूसरों की हानि होती है। अंहकार, स्वार्थ, गुस्सा, तो ऐसी आग है, जो सम्बन्धों, समाजों व परिवारों अर्थात सब रिश्तों में भंयकर अन्मेल पैदा कर देती है। इस प्रकार मनुष्य के भीतर के सुख अनुरागों से उन्पन्न सब प्रकार की गतियां व चिन्ताएं पाप की गतियां व चिंताएं होती हैं।

यदि हम इन पाप मूलक हानिकारक गतियों व चिन्ताओं से बचना चाहते हैं तो सर्वप्रथम उनके विषय में बोध व ज्ञान पाना अवश्यक है। धर्मवान बनने के लिए भी यही बोध और ज्ञान अवश्यक है। सर्वप्रथम पाप क्या होता है उसका ज्ञान प्राप्त हो, पाप से जीवन में और सम्बन्धों में आने वाले परिवर्तन का ज्ञान हो। पाप मूलक गतियों के भयानक रुप, उनका ज्ञान, उनके द्वारा भयानक परिणामों का ज्ञान, पाप का ज्ञान है। ज्ञान और बोध में भी अन्तर है। किसी बात को दिमाग से समझ लेना ज्ञान है और उसका गहराई में एहसास व उसकी हानि का एहसास उससे बचने के मार्ग पर डालता है। मान्सिक ज्ञान से हार्दिक उपलिब्ध नहीं होती। जितना गहरा पापों की हानि का एहसास हो व अपनी हानिकारक गतियों, पाप मूलक चिन्ताओं व क्रियाओं के प्रति डर, ख़ौफ व दुख का गहरा एहसास हो वही पाप बोध की गहराई है। प्रत्येक चिन्ता व क्रिया की नेचर में प्रतिक्रिया हैं प्रत्येक गति से परिवर्तन आता है। नीच गति से मनुष्य विनाश की सीढ़ी पर सवार हो जाता हैं तो नीच परिवर्तन आता है, यदि यह क्रम चलता रहे तो इससे अन्धता व कठोरता पैदा होती है जो पाप के परिणाम की पहली सीढ़ी है।

पाप की दूसरी सीढ़ी है उल्टी दृष्टि। पाप मूलक गतियां अच्छी लगने लगती है, मनुष्य उसकी पोषकता करने लगता है। सुख लालसाओं की तृप्ति सुख के स्रोत नज़र आने लगते हैं, ऐसे ही जनों की ज़ुबान से यह निकला है, ''बाबर ऐश कोष कि आदम दुबारा नेस्त''

पाप मूलक क्रियाओं की तीसरी सीढ़ी है कि मनुष्य अनुचित दुखों में फंस कर घुल घुलकर खत्म हो जाता है।

पाप कर्मों की चौथी सीढ़ी है मनुष्य के आत्मिक बल (will power) का नाश होते जाना। जीवनी शक्ति इतनी दुर्बल व कमज़ोर हो जाती है कि उसके बचने के सब मार्ग बन्द हो जाते हैं और जीवनी शक्ति ही नष्ट हो जाती है। यह चारों सीढ़ीयां मौत की ओर ले जाती हैं।

इन सब विनाशकारी परिणामों का मान्सिक ज्ञान और नीच परिवर्तन का भयानक रुप का हार्दिक बोध प्राप्त करके ही मनुष्य अपने विनाश से बच सकता है। परम पू. भगवान देवात्मा की सर्वोच्च रुहानी रोशनी के भीतर पाप मूलक हानिकारक गतियों का भयानक रुप नज़र आता है, अपने नीच परिवर्तन को

मनुष्य अपनी योग्यतानुसार साफ-2 देखने लगता है। उस नीच परिवर्तन का आत्म-घाती, दुखदाई रुप उसके सामने उज्जवल होने लगता है और उससे मुक्त होने के संग्राम में पड़ जाता है। पू. भगवान के प्रभावों में ही एक-2 धन अनुरागी कंजूस जन अपना सब कुछ परोपकार में लगाने के योग्य बना है। एक-2 जन नशों से बचा ही नहीं बल्कि शराब जैसी चीज़ को पट्टी पर लगाकर चोट पर लगाने को भी घृणा करता है। पशुओं पर अत्याचार करने वाले जनों को, उनके लिए सेवाकारी ही नहीं बनाया, बल्कि मांस जैसे घिनौने शब्द को मुंह से उच्चारने में भी कष्ट अनुभव करते हैं। काम वासना का बोधी बनाकर एक-2 जन को इतना पवित्र बना दिया है कि वह सदा के लिए स्त्रियों के सम्बन्ध में भरोसे के योग्य बन गया।

पाप के बोध से ही उससे हानि का सच्चा बोध उपजता है दूसरों के लिए ऐसा जन हितकर व सेवाकारी बन जाता है और इन पंक्तियों को सार्थक बनाता है:-

''पाप का बोध मैं पाऊं, न पर हानि कभी चाहूं
मैं हितकर जीव बन जाऊं, यही हो कामना मेरी''।

बलदेव सिंह

क्षमा का महत्त्व

प्रत्येक मनुष्य सुख अनुरागी है और सुख अनुरागी मनुष्य के लिए परस्पर सम्बन्धों में गल्ती करना स्वभाविक है। जब किसी के सम्बन्ध में गल्त जाते हैं, तो हमारा अंह क्षमा-याचना करने में बाधक बनता है, परन्तु यदि कोई और गल्ती करता है, तो हम उमीद करते हैं कि वह हमसे क्षमा मांगे।

दूसरी ओर यदि हम क्षमा मांगते हैं तो दूसरे से क्षमा-दान की आशा करते हैं, परन्तु कई बार दूसरे के क्षमा मांगने पर भी हम अपने दिल से उसको क्षमा नहीं करते। भाव यह है कि क्षमा मांगना और क्षमा देना दोनों ही मनुष्य को महान बनाते हैं।

सबसे बड़ा बोझ जो इन्सान अपने ऊपर उठाए फिरता रहता है, वह है दूसरे के बुरे व्यवहारों के प्रति कड़वाहट का बोझ जो न उसे सोने देता है, न अच्छी तरह खाने। एक कैंसर की तरह वह मनुष्य को अन्दर से खाता रहता है। यदि हम बिना क्षमा मांगे ही दूसरे को क्षमा कर दें, जैसा कि अपनी ग़ल्तियों के लिए स्वयं को सदा ही मुआफ करते हैं, तो हम आन्तरिक शान्ति की हालत में रह सकते हैं।

क्षमा मांगकर या क्षमा करके कोई इन्सान छोटा नहीं होता। महाराजा रणजीत सिंह जी के विषय में कहा जाता है कि शाम को सैर करते समय उन पर एक पत्थर गिरा और वह ज़ख्मी हो गए। एक बूढ़ी औरत ने आम गिराने से लिए वह पत्थर मारा था, क्योंकि उसका बेटा तीन दिन से भूखा था। इस पर महाराजा ने उसको सज़ा देने के स्थान पर, उसे मोहरों की थैली भेंट की और कहा कि जिस वृक्ष का दिमाग़ नहीं वह तो पत्थर मारने पर फल देता है, हम बुद्धिमान होकर इस औरत को सज़ा कैसे दे सकते हैं? इस औरत को क्षमा करने से महाराजा का प्रजा में सम्मान और बढ़ा, वह छोटे नहीं हुए।

पिछले वर्ष एक महिला कोलकाता से आई और स्वर्ण मन्दिर अमृतसर के परिसर में उसने

अपने पूर्वजों द्वारा सिक्खों के साथ किए गए अन्याय के लिए क्षमा मांगी। यह औरत थी सुलताना बेगम जो मुगलिया खान-दान की बहु है। उसका पति हिन्दुस्तान के आख़री मुग़ल बादशाह बहादुर शाह ज़फर का पड़पोता था। पहले वह दिल्ली में चांदनी चौक में स्थित गुरुद्वारा शीशगंज गई जहां औरंगज़ेब के हुक्म से नवम गुरु तेग बहादुर जी का शीश कत्ल किया गया था। बेग़म के विचार में सिक्खों की गरीबी और मज़बूरी के पीछे सिक्खों पर मुगलों का ज़ुल्म बहुत बड़ा कारण है। फिर वह अमृतसर गई, वहां भी उसने क्षमा-याचना की। उनकी इस सारी कोशिश के पीछे कोई राजनैतिक उद्देश्य नहीं था, बल्कि एक सवेंदनशील हृदय की एक कोशिश थी जो कौम को कुछ राहत पहुंचा सके, जिन पर उनके खानदान वा उनकी कौम के द्वारा सितम हुए थे। वह शोहरत की भूखी नहीं थी। न ही उसने आर्थिक किसी सहायता की मांग की। उसने आवेश में यहां तक कह दिया कि, ''मेरी इच्छा थी कि मैं यहां आकर अपने पूर्वजों के गुनाहों को क्षमा करवाऊं, जिससे उनके आत्माओं को भी शान्ति मिल सके और सिक्ख कौम को भी कुछ सकून मिले''

उसने यह आशा भी जताई कि सिक्ख कौम उन्हें क्षमा कर देगी। शायद यही कारण था कि सिक्ख अजायबघर में मुगल सुल्तान के अत्याचारों के चित्र देखकर उसकी आंखों में आंसु भर आए। यह कोई साधारण घटना नहीं और सुल्ताना बेगम भी कोई साधारण औरत नहीं है। किसी साधारण व्यक्ति के लिए अपने अतीत के गुनाहों का बोझ उठाना और उसे स्वीकार करके उसकी भरपाई करना आसान नहीं होता, इसमें विशेष प्रकार की संवेदनशीलता वा बल की अवश्यकता होती है। उसकी क्षमा मांगने के साथ सारे समुदाय के जज़बात जुड़े हुए थे। बेशक आज हम इसे एक ख़बर समझकर भूल जाएं परन्तु यह बात इतिहास का एक भाग बन गई हैं।

सुल्ताना बेग़म की क्षमा-याचना पर भी मिली जुली प्रतिक्रिया हुई। किसी ने कहा कि उसके परिवार का एक जन सिक्ख बनें तो क्षमा होगी। यह हमारे दिल की संकीर्णता है। परन्तु क्षमा मांगना और क्षमा करना एक रिश्ता बनाना होता है। सिक्ख धर्म में क्षमा करना कोई नई बात नहीं। उसकी बुनियाद में क्षमा याचना का बहुत बड़ा स्थान है।

जैसे फैवीकोल टूटे हुए दो टुकड़ों को जोड़ देता है, वैसे ही क्षमा याचना टूटे हुए रिश्तों को फिर जोड़ देती है। यदि कोई बड़ा आदमी किसी छोटे से क्षमा मांगे, तो इसका महत्त्व और भी बढ़ जाता है।

माननीय सरदार साहिब सरदार हरनाम सिंह जी के जीवन की घटना स्मरणिय है। एक बाहिए का सरदार जो नाक पर मक्खी नहीं बैठने देता था और अपने मताहतों पर हुक्म चलाना और न माने जाने पर उन्हें सजा देना अपना हक समझता था, अपनी सरदारी के घमंड में किसी के आगे झुकना उसके लिए असम्भव जैसा था, उसे परम पू. भगवान देवात्मा ने इस योग्य बना दिया कि वह एक अपने नौकर से क्षमा याचना करे। एक कहलाने वाली छोटी जाति का आदमी, जिसे हुक्म मिलता है कि दातुन तोड़ कर लाए। वह अपने बोधों के अनुसार मोटी लम्बी टहनी तोड़ कर ले आता है। जिसे देखकर सरदार साहिब का खून खौलने लगता है और गुस्से में आकर उसी दातुन नुमा छड़ी से उसे पीटने लगते हैं इतना पीटते हैं कि उस गरीब का हृदय छलनी हो जाता है और वह दुख में गांव छोड़कर चला जाता है। परन्तु खुश किस्मती से सरदार साहिब को परम पू. भगवान देवात्मा के देव प्रभाव मिलते हैं, जो उनकी घमंडी, अंहकारी और अत्याचारी तस्वीर को दिखाते हैं, उन्हें अपने व्यवहार के लिए ग्लानी अनुभव होती है। वह उस अदना से

मुलाज़िम को ढूंढ़ने लगते हैं, पता लगने पर उस गांव में पहुंचते हैं, जहां वह अब रह रहा था। सरदार साहिब को देखकर फिर उसे लगता है कि उस पर कोई अत्याचार होने वाला है, परन्तु सरदार साहिब का गरूर तो टूट चुका था, उन्होंने उससे भरे दिल से क्षमा मांगी, परन्तु उस दुखी जन को विश्वास नहीं हुआ, तो सरदार साहिब ने एक लाठी उसे देकर कहा कि यह लो लाठी और मुझे इतना मारो कि जिससे तुम्हारे दिल में ठण्डक पड़ जाए और तुम मुझे क्षमा कर दो। इससे उस दुखिया का मन भी पिघल गया और सरदार साहिब एक नया रिश्ता कायम करके वहां से आए एक ऐसा रिश्ता जो अमीर और गरीब का बराबरी का रिश्ता। उनकी इस क्षमा याचना से जो शन्ति दोनों को मिली, उसका अनुमान कठिन है।

क्षमा याचना वह दान है जो हमारे बिना कुछ खर्च किए दूसरे को मालामाल कर देता है। ग़ल्ती हो जाना मनुष्य प्रकृति के लिए स्वभाविक है, परन्तु क्षमा मांगकर हम उस ग़ल्ती को सुधार भी सकते हैं और सन्तप्त हृदय को शान्त करके स्वयं भी शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। अपने आत्मा की मैल को धोने का केवल यही एक मार्ग है।

(सुरजीत बराड़)

बस, कुछ ऐसी ही थी मेरी माँ

(स्वर्गीय श्रीमती सुन्दरी अग्निहोत्री को श्रद्धांजली)

मेरी माँ सरहद पारके एक छोटे से शहर 'कमाल्या' से अपना सम्बन्ध रखती थी लेकिन खुद कभी सरहदों में नहीं बंधी। अपने बचपन में ही अपनी मां को खो चुकी मेरी मां शायद जानती थी मां का अस्तित्व क्या होता है बच्चों के लिए और इसीलिए अपनी कोशिशों से उन्होने अन्त तक हमारी परवरिश की, उस उम्र में भी देखभाल की जब हम उनकी देखभाल के लायक हो गये।

शिक्षा के क्षेत्र में अपना खास मकाम रखने वाली मां के लिए शिक्षा के मायने सिर्फ किताबों तक सीमित नहीं थे। वे स्वयं एक संस्कारिक किताब थी या यों कहूं कि संस्कारों का एक स्कूल थी 'एकेडमी' थी तो भी ज्यादा नहीं होगा उनके लिए।

वे पंजाब और हिमाचल में शिमला के कई स्कूलों की बेहतरीन प्रिंसीपल एवं उम्दा प्रशासक रही। उनके दौर में हर स्कूल ने हर क्षेत्र में एक खास मकाम हासिल किया चाहे कल्चरल क्षेत्र हो या कोई और उनके नेतृत्व में अव्वल आना उस स्कूल की किस्मत बन चुका था।

सुन्दरी अग्निहोत्री एक संजीदा मां थी, एक ऐसी मां जो अपने बच्चों का सम्पूर्ण विकास चाहती थी और उसके लिए खुद हर कीमत चुकाने को तैयार रही फिर चाहे उन्हें हम भाईयों को अपने से दूर सोलन के एक बोर्डिग स्कूल में ही क्यों न डालना पड़ा। और उस उम्र से लेकर इस उम्र तक उन्होंने हमारी हर जरूरत का ध्यान रखा चाहे बात खाने की हो या पॉकेट मनी की।

हमारी मां ने हमें आस्थावान बनाया। अन्त तक वो हमारी चिन्ता ही करती रहीं।

अपने पोतों के साथ भी उनके सम्बन्ध कुछ खास किस्म के थे।

उनके साथ खेलने उन्हें संस्कारित करने के

दायित्व से उन्होंने कभी अपना मुंह नहीं मोड़ा। हां अपने बेटों को लेकर वे काफी पुजेसिव थी, हर मां होती है पर मेरी मां कुछ भिन्न थी। अपनी बहुओं के साथ उनके सम्बन्धों को मैं कठोर तो नहीं कह सकता पर उनके साथ उनका एक दायरा था वे कभी उन्हें उसके अन्दर नहीं आने देती थी। कारण क्या थे न उन्होंने बताया न हमने जानना चाहा। उन से क्या सवाल पूछें जो हमारी ज़िंदगी के हर सवाल का जवाब थी। उन्होंने हम पर ज़्यादा बन्धन नहीं रखे पर एक बन्धन था कैसी भी परिस्थिति हो हम भाईयों में अलगाव न हो और हमें अपने सम्बन्धों की प्रगाढ़ता को बनाए रखना होगा।

उनकी एप्रोच भावुक थी। उनके लिए दुनियां उनके पति व बच्चों तक ही सीमित थी।

मेरे पिता के लिए वो जो थी वह संस्कृत का यह श्लोक स्पष्ट कर देता है

कर्मेषु दासी, भोज्येषु माता .....

अपना पूरा जीवन कर्मठता से बिताने वाली मेरी मां में अदम्य साहस था। जीवन जीने की अद्‌भूत ललक थी। अपने ज़िन्दगी के 72 वें वर्ष में उनके घुटने के आपरेशन के बाद व पहले भी वे कभी निराश नहीं लगी क्योंकि वे ज़िन्दगी से भरपूर थी। डॉक्टर के कहे वे शब्द मैं नहीं भूल सकता 'कर्नल अग्निहोत्री आपकी मां एक साहसी महिला है, 'इस उम्र में ऐसी अदम्य इच्छाशक्ति, ऐसा साहस कम ही देखने को मिलता है' और इस सैनिक का सीना गर्व से फूल गया। उस दौरान मैं, मेरी पत्नी व मेरा बेटा उनके साथ रहे या यों कहें कि उन दिनों में भी वे हमारे साथ रही। हम चिन्तित थे उनके लिए वे ढाढस बधां रही थी हमें।

उनकी अनुपस्थिति बहुत महसूस हो रही है। अन्त में इतना ही कहूंगा–

उसको नहीं देखा हमने कभी,
पर उसकी ज़रूरत क्या होगी
ऐ मां तेरी सूरत से अलग,
भगवान की सूरत क्या होगी।

बस कुछ ऐसी ही थी मेरी मां।

कर्नल आर. के. अग्निहोत्री (पुत्र)
की सम्मान सहित भेंट

आरम्भिक दिन :– 16 नवम्बर 2005 को है। इस दिन को पाक खुशियों से भरकर मनाना चाहिए। गुरु महिमा के गीत सुबह सवेरे गाकर और प्रभात फेरियां करके और साधन करके इस दिन को अधिक से अधिक सफल बनाना चाहिए।

– मंत्री

शास्त्री जी

(लाल बहादुर शास्त्री के सपुत्र)

देश के इतिहास में दो अक्तूबर का दिन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दिन है। इस तारीख को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिन के साथ ही लालबहादुर शास्त्री जी का भी जन्मदिन पड़ता है। इन दोनों महापुरुषों ने अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अपने देश में ही नहीं, बल्कि समूचे विश्व में अपनी छाप छोड़ी है, जो इतिहास के पन्नों पर सदैव अंकित रहेगी। गांधीजी ने सत्य, अहिंसा और प्रेम के अमोघ अस्त्र से देश को आज़ादी दिलाई और दुनिया के सामने एक मिसाल पेश की।

अन्य कई लोगों की तरह शास्त्रीजी पर भी गांधी जी की अमिट छाप बाल्यकाल से ही रही। हम यह भी कह सकते हैं कि वह अपने बचपन में जब शायद गांधीजी का नाम भी नहीं जानते होंगे, तभी से गांधी जी के पथ के राही बन गए थे।

शास्त्रीजी के बारे में मुझे कुछ घटनाएं याद हैं, जो मुझे तथा अन्य कई लोगों को भी प्रेरणा देती हैं। उनके बचपन की बात है। एक बार उनके मामा विंध्येश्वरी जी ने उन्हें यह वचन दिया कि तुम कबूतर को खपरैल से उतार कर मुझे दे दो, मैं उसे न तो मारूंगा और न खाऊंगा। बालक लालबहादुर उनके कहने में आकर खपरैल पर चढ़कर कबूतर पकड़कर ले आया और मामा को दे दिया। मामा ने उस कबूतर को मारा और पकाकर खा गए। बालक लालबहादुर को बड़ा दुख हुआ। मामा के झूठ बोलने और कबूतर की हत्या करने पर उन्होंने दो दिनों तक खाना नहीं खाया। हरदम वह कबूतर उनके दिलो-दिमाग में घूमता रहा। आख़िरकार मामा के इस वचन पर कि आज से वह न मांस खाएंगे और न जीवन हत्या करेंगे, लालबहादुर ने खाना खाया।

एक दूसरी घटना है। शास्त्रीजी अपनी किशोरावस्था में एक बार अपने हम-उम्र मामा लल्लन के साथ शाम को घूमने बाहर निकले हुए थे। घर लौटते समय एक बूढ़ा आदमी सिर पर टोकरी रखे आम बेच रहा था। आम का भाव पूछा, तो उसने कहा- शाम हो गई है, इसलिए एक आने में 100 आम दे देंगे। एक आना देकर लालबहादुर ने 50 आम ही लिए। इस पर मामा ने पूछा कि जब वह बूढ़ा एक आने में 100 आम दे रहा था, तो तुमने 50 आम ही क्यों लिए। बालक लालबहादुर ने कहा, 'मामा, वह मजबूरी में 100 आम दे रहा था। हमें किसी की मजबूरी का फ़ायदा नहीं उठाना चाहिए।'

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' वाली कहावत को शास्त्रीजी बाल्यकाल से ही चरितार्थ करने लगे थे। जब वह कुछ बड़े हुए और विद्याध्ययन कर रहे थे, उसी समय 1917 में एक ऐसी घटना घटी, जिसने उनके जीवन की दिशा बदल दी। 1917 में हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना के उद्घाटन अवसर पर गांधी जी द्वारा दिए गए भाषण का प्रभाव उन पर इतना पड़ा कि उन्होंने पढ़ाई बीच में ही छोड़कर गांधी जी के आह्वान पर स्कूल का बहिष्कार करने का निश्चय कर लिया। गुरुजनों, विधवा मां तथा अन्य रिश्तेदारों के समझाने का कोई असर उनके मन पर नहीं पड़ा। गांधी जी को वह अपना आदर्श मानने लगे। शीघ्र ही वह गांधीजी के दिखाए गए पथ पर चलने वाले एक सच्चे अनुयायी बन गए।

गांधीजी से ही उन्होंने सत्य, अहिंसा, देशप्रेम और स्वावलंबन की दीक्षा ली। वह ताउम्र सादा जीवन उच्च विचार, स्वावलंबन एवं वसुधैव कुटुंबकम के अनुगामी रहे। गांधीजी ने स्वराज मिलने पर कहा था

कि यह उनके लंबे सफर का पड़ाव है। जब तक एक भी आंख में आंसू है, उनके संघर्ष का अंत नहीं हो सकता। गांधीजी के इसी लक्ष्य को शास्त्रीजी ने उच्च राजनीतिक पदों पर पहुंचकर सदैव पूरा करने का प्रयास किया। इन प्रयासों में उन्हें सफलता भी मिली। यही कारण है कि उन्होंने पराई पीड़ा को समझा और उस पीड़ा को शांत करने का अनवरत् प्रयास किया और वे नेता से जनसेवक बन गए।

गांधीजी की ही भांति शास्त्रीजी भी गीता में वर्णित निष्काम कर्म के उपासक रहे। जहां निष्काम कर्म है, वहां न पद का मोह है, न धन का लोभ, न यश की लालसा और न कीर्ति की अभिलाषा। केवल जीवन का एकमात्र उद्देश्य -सत्कर्म करना। शास्त्रीजी के जीवन पर यदि विहंगम दृष्टि डालें, तो स्पष्ट होगा कि उन्होंने इन बातों को पूरी तरह आत्मसात कर लिया था। रेल दुर्घटना से आहत होकर रेलमंत्री के पद का त्याग, देश के सर्वोच्च पद पर पहुंचने पर भी सादगी, नाममात्र का भी अंहकार नहीं। प्रचार-प्रसार से सदैव दूर। वे युद्ध विजेता बनकर भी शांतिदूत बने और अपने बच्चों के आग्रह पर कर्ज़ लेकर कार खरीदने वाला देश का प्रधानमंत्री बैंक का कर्ज़ छोड़कर हमेशा के लिए दुनिया से विदा हो गया।

वे गांधीजी को अपना इष्ट और आदर्श मानते थे, इसलिए जब कभी उनकी तुलना गांधीजी से की जाती थी, तो वह इस पर एतराज़ करते थे। वे अपने जन्मदिन की तारीख़ कभी किसी को नहीं बताते थे। एक बार पंडित जवाहरलाल नेहरू को कहीं से पता चला, तो उन्होंने राजघाट पर शास्त्रीजी से पूछा कि लाल बहादुर, तुम्हारा जन्मदिन भी दो अक्तूबर है? शास्त्रीजी ने जवाब दिया- गांधी जी का जन्मदिन सबका जन्मदिन है।

(लेखक लालबहादुर शास्त्री के पुत्र है)

अण्डों सम्बन्धी भ्रान्तियां

क्या अण्डा शाकाहारी है या मांसाहारी प्रश्न यह मुख्य नहीं है, मुख्य यह है कि यह अच्छा है या बुरा। आईए हम प्रश्न के दूसरे भाग पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।

सरकारी आँकड़ो के अनुसार अण्डों की खपत 1950 के दशक में पांच लाख थी जो अब बढ़कर दस लाख हो गयी है इस अप्रत्याशित (36 प्रतिशत) बढ़त का (उस समाज में जो कि मुख्यतया शाकाहारी है) क्या कारण है?

इसका श्रेय नेशनल ऐग कोआरडीनेशन कमेटी (मुर्गी पालन व्यवसाय की शिखर संस्था) के संरक्षण में युद्धस्तर पर चल रही विज्ञापन मुहिम को जाता है। अंग्रेजी एवं क्षेत्रीय भाषा की लगभग सभी अग्रणी पत्रिकाओं (साईंस पत्रिकाओं को छोड़कर) में अण्डे के विषय में रंगीन संदेशों (विज्ञापनों) की भरमार रहती हो। ''अण्डा मल्टीविटामिन कैप्सूल है'', अण्डा बच्चों के विकास के लिए माता की सर्वोत्तम पसन्द वगैरह। (जब कि किसी खाद्य पदार्थ का किसी खास शारीरिक क्रिया के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है) यह बात उपभोक्ताओं के मस्तिष्क में कूट-कूट कर भरी जा रही है और विश्वास दिलाया जा रहा है कि अण्डा ही उनके लिये सर्वोत्तम आहार है।

अब हम मेडीसीन और न्यूट्रीशनल साईंस के क्षेत्र में उपलब्ध नवीन जानकारियों के आधार पर यह जानने का प्रयास करते हैं कि इन विज्ञापनों में कितना तथ्य हैं।

अण्डे पर एक दिग्भ्रमित विज्ञापन में कहा गया है कि यह बहुत पौष्टिक है यह खनिजों, विटामिनों व प्रोटीन से भरपूर है। यह मल्टीविटामिन कैप्सूल है। इसमें विटामिन ए, डी, बी भरपूर मात्रा में है यह दावा अर्धसत्य है। तथ्य यह है कि अण्डा मुख्यत: प्रोटीन के लिये खाया जाता है न कि विटामिनों के लिये। लेकिन विज्ञापनों द्वारा यह अहसास कराया जाता है कि अण्डे में सभी पोषक तत्व होते है, जो हर आयु के लोगों के लिये आवश्यक है। प्रकृति में कोई भी ऐसा अकेला खाद्य पदार्थ नहीं है, जिसमें सभी पोषक तत्व एक साथ विद्यमान हों। यह अलग-अलग खाद्य पदार्थो से लिये जा सकते हैं, जैसे कारबोहाईड्रेट्स स्रोत, प्रोटीन स्रोत। अत: सभी खाद्य पदार्थो का बुद्धिमत्तापूर्ण मिश्रण ही संपूर्ण आहार है।

अब हम अण्डे के पौष्टिक गुण पर आएं तो 100 ग्राम वजन अण्डे में 13.5 प्रतिशत प्रोटीन, 13.3 प्रतिशत संतृप्त वसा (सेचुरेटिड फैट) होती है, जबकि पारम्परिक रूप से घरों में इस्तेमाल होने वाली दालों में 24 प्रतिशत प्रोटीन, 13 प्रतिशत असंतृप्त वसा (अनुसेचुरेटिड फैट) होती है। अत: अण्डे का प्रोटीन के मुख्य स्रोत्र का दावा बुनियादी तौर पर सही नहीं है।

दूसरा विज्ञापनों में अण्डे के बारे में यह दावा कि यह विटामिन का स्रोत है भी असत्य, गलत व भ्रमित करने वाला है।

अण्डे में 1200 I.U. विटामिन ए होता है जबकि संजना वृक्ष के पत्तों में 8,000 I.U. से 1000I.U. व धनिये के पत्तों में 10,000I.U. से 12,000I.U. ए विटामिन होता है यह स्रोत सस्ता और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर है। विटामिन ए पत्तेदार सब्जियों और गाजर में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है।

अण्डे में विटामिन डी के दावे के बारे में भी विज्ञापन फिर भ्रमित करने वाला है। विटामिन डी सामान्यत: शरीर में चमड़ी के नीचे वसा द्वारा सूर्यकिरणों की मदद से उत्पादित होता है। हमारे देश में सूर्य किरणें प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं अत: इस विटामिन के लिये पैसे खर्च करके अण्डा खाना व्यर्थ है।

अण्डे में विटामिन बी का विज्ञापन भी असत्य है। विटामिन बी एक पानी में घुलनशील आवश्यक पदार्थ है, जो न्यूरो तंत्र (Nervous System) के विकास के लिए जरूरी है। इस विटामिन समूह के विटामिन बी 1, विटामिन बी,, विटामिन बी 12 होता है जो कि दालों और कुछ सब्जियों में पाया जाता है। यह विटामिन अण्डे में इतना कम होता है कि इसका अनुपात नहीं के बराबर होता है।

खमीरयुक्त खाद्य पदार्थ जैसे इडली में विटामिन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। अण्डा जो कि अब लगभग दो रुपये का पड़ता है वह अन्य दालों व सब्जियों के मुकाबले पौष्टिकता में भी पीछे है। आर्थिक दृष्टि से भी अण्डा खाना उचित नहीं है जबकि हानिरहित संतृप्त वसा व कोलेस्ट्रोल मुक्त दालें आसानी से उपलब्ध हैं।

अण्डे के विज्ञापन में खास बात (जबकि अन्य पदार्थो को किसी विज्ञापन की आवश्यकता नहीं है) यह है कि उनमें इस तथ्य को जानबूझ कर छिपाया जाता है कि यह एक हानिकारक खाद्य पदार्थ है।

हर 100 ग्रा. वजन अण्डे में 450 से 500 मि. ग्रा. कोलेस्ट्रोल होता है, जो खतरनाक रूप से ज्यादा मात्रा में है। अत: अण्डा हार्टअटैक, स्ट्रोको व अन्य हृदय रोगों के लिये पूर्ण रूप से जिम्मेदार है। (तुलनात्मक दृष्टि से एक कप दूध में 5 से 10 मि. ग्रा. कोलेस्ट्रोल होता है। मांस में 125 मि.ग्रा. ओर दिमाग व गुर्दे में लगभग 1000 मि.ग्रा. कोलेस्ट्रोल होता है।)

नवीन शोधों के अनुसार प्रत्येक अण्डे के सेवन से लगभग 5 मि. ग्रा. कोलेस्ट्रोल खून में मिल जाता है।

यह स्वास्थ्य दृष्टि (Medically) से प्रमाणित किया जा चुका है कि 250 मि. ग्रा. से ज्यादा शरीर में कोलेस्ट्रोल की मात्रा हार्टअटैक, स्ट्रोक व अन्य हृदय रोगों के लिए खुला आमन्त्रण है। अत: लगातार अण्डे खाने की सलाह जो विज्ञापनों द्वारा दी जा रही है, वह निश्चित तौर पर मानव स्वास्थ्य के लिये खतरनाक है। इसलिए बड़े व मध्यम आयु के लोगों की खुराक में अण्डे का पूर्ण निषेध होना आवश्यक है।

इतना ही नहीं संतृप्त वसा की मात्रा भी अण्डे में प्रोटीन की मात्रा के लगभग बराबर ही होती है, जो कोलोस्ट्रोल को धमनियों में जमा होने में मदद करता है। मलेथिओनाईन नामक ऐमिनो ऐसिड के बारे में नवीनतम खोजों से पता चला है कि यह हृदय रोगों के लिये जिम्मेदार है व शरीर में विटामिन बी को नष्ट कर देता है। यह अण्डे और मांस में समान रूप से पाया जाता है। ये विटामिन वसा में घुलनशील होते है अत: अवश्यकता से ज्यादा मात्रा में शरीर में जमा हो जाते है और कई हानिकारक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। विटामिन डी के ज्यादा सेवन (यह खाने द्वारा लगातार लिया जाये तो ज्यादा हो जाता है क्योंकि सूर्य किरणों से यह हमारे शरीर में उत्पन्न होता ही है) से Calcium Crystralization जोकि दूध के सेवन से फिर ज्यादा हो जाता है और यूरिक ऐसिड के Reaction से गुर्दे व पित्त की थैली में पत्थरी हो जाती है। विटामिन ए की जरूरत भी उसके शुद्ध स्वरूप जो कि पत्तेदार सब्जियों से प्रचुर मात्रा में प्राप्त हो जाता है, भी सीमित हो जाती है।

अण्डे के बाहरी आवरण में 25,000 से 30,000 सूक्ष्म छिद्र होते हैं, जो भ्रूण के लिए आक्सीजन लाने का काम करते है। यही छिद्र माईक्रोब्स के अन्दर आने व अण्डे के खुले में 30 डिग्री ऊपर भण्डारण पर दूषित करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं। अत: अण्डे यदि रेफरीजरेटर में न रखे जाएं तो वे 48 घंटे के भीतर सेवन योग्य नहीं रहते। यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि महानगरों व शहरों में अण्डे किस प्रकार रखे व बेचे जाते हैं।

अण्डे के बारे में एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इसमें कार्बोहाईड्रेटस और फाईबर नहीं होता है, जो इसके सेवन को सर्वथा अयोग्य साबित करता है। कार्बोहाईट्रेडस खाने में ईधन के समान होता है जो कैलोरिज उत्पादन के लिये आवश्यक है। चुस्ती और विकास के लिये अण्डे से जरूरी कैलौरीज नहीं मिलती। यह खाद्यान्नों और दालों से आसानी से उपलब्ध हो जाती है। (100 ग्रा. मूंगफली 549 कैलोरीज 100 ग्रा. अण्डा - 170 कैलोरीज) इन सब खामियों और खराबियों के कारण ही साबित होता है कि अण्डा हानिकारक खाद्य पदार्थ है। ऐसे और भी कई खतरनाक तथ्य इसके उत्पादन एवं मुर्गीपालन व्यवसाय से जुड़े हुए हैं।

लगभग हर आधुनिक मुर्गीपालन केन्द्र में बाईर्लस प्रयुक्त होते हैं। मुर्गियों को खाने में ज्यादा मात्रा में एन्टीबायोटिक्स, हारमोन और ट्रेंकुलाईज़रज़ दिये जाते हैं, जिससे उनकी बीमारियां मनुष्यों में न पहुंचें व ज्यादा अण्डे दे सकें, ज्यादा वजनदार हों व आर्टीफिशियल रोशनीयुक्त कम जगह में रहते हुए आपस में झगड़ न सकें।

खासतौर से जेन्टामाईसिन नामक एंटीबायोटिक जो मुर्गी के खाने में बहुत प्रयुक्त होता है। अण्डे द्वारा मनुष्यों में अनावश्यक रूप से पहुंचकर गुर्दो को नुकसान पहुंचाता है। यह प्रमाणित किया जा चुका है जैन्टामाईसिन नामक एंटीबायोटिक गुर्दे खराब करने के लिये उत्तरदाई हैं।

डाकटर्ज़ फोरम

भारतीय प्राणी कल्याण समिति (रजि.)

श्रद्धांजलि सभा

जैसा कि जून-जुलाई के अंक में देह-त्यागी के बारे में व सभाओं के बारे में नोटिस दिया गया था कि हमारे अजीज साथी श्रीमान बलकार सिंह जी अपनी भरी जवानी में हमें छोड़ गए है। उनकी श्रद्धांजलि के लिए श्रीमान बलदेव सिंह जी (चण्डीगढ़ से), श्रीमान मेहर सिंह जी (चण्डीगढ़ से), श्रीमान बलबहादुर सिंह जी (कल्याण से) सुखदेव जी (चण्डीगढ़ से) 5 मई को मल्लेका में शाम तक पहुंच चुके थे। उनके परिवार को मिलकर परिवारिक जनों को सात्वंना दी। रात को श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने देह-त्यागी के गुणों व शुभकामना सम्बन्धी एक सभा कराई।

अगले दिन फिर एक सभा की गई जो देह-त्यागी के अच्छे हृदय के भावों के विषय में थी। किस प्रकार श्रीमान जी के जीवन में गुरू महाराज का काम हुआ है उसका वर्णन किया गया। हमें किस प्रकार हौसला रखकर उनके परिवार की जिम्मेवारियों को निभाकर देहत्यागी को सच्ची श्रद्धांजलि देनी चाहिए। उसका वर्णन किया गया।

7 मई को विशेष श्रद्धांजलि की सभा रखी गई। देहत्यागी का बड़ा फोटो तैयार करवाया गया। सभा स्थान को उचित रुप से सजाया गया। सुन्दर गुलाब के फूलों व हारों का प्रबन्ध किया गया।

7-05-05 दिन शनिवार सुबह 11.00 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने यह सभा करवाई। सबसे पहले 'हमारे सतगुरू जी तुम हो धन्य' नामक भजन का गान किया गया।

इसके बाद प्रार्थना की गई व सुन्दर हारों व फूलों से परिवार व अन्य धर्म सम्बिन्धियों ने श्रीमान बलकार सिंह जी की फोटो के सामने आकर उनको श्रद्धांजलि दी।

सभापति जी ने फरमाया कि हम सब यहां पर किस मकसद के लिए इकट्ठे हुए हैं यह हम जानते हैं कि हमारे प्यारे अजीज़ श्रीमान बलकार सिंह जी अपनी भरी जवानी में इस दुनियां से चले गए हैं।

सारे मनुष्य मात्र को सबसे बड़ा एक भुलेखा रहता हैं कि हम अपने आप को जानते हैं व हम ठीक है। मैं ठीक हूं यही समझते रहते हैं। लेकिन तराजू यह है कि जो बात विज्ञान की कसौटियों पर खरी उतरे वही ठीक है, बाकी सब अन्धेरे की बाते हैं।

आज के दिन श्रीमान बलकार सिंह जी को श्रद्धांजलि देने का समय है। समय के साथ-साथ हम सब ने ही चले जाना है परन्तु आप का बहुत ही भरी जवानी में चले जाना एक बहुत बड़ा सदमा है। इस अति दुःखदाई घटना ने जो हमारे हृदयों को ज़ख्म दिए है, उनको भरने में समय लगेगा।

गुरू महाराज ने फरमाया है कि मनुष्य के मरने का हमें बहुत दुःख होता है परन्तु इसके इलावा ज्यादा ज़ोर-ज़ोर से रुदन करके, अपना माथा व सिर पिटने से क्या हम अपने लिए व क्या देहत्यागी के लिए हानिकारक साबित होते हैं, जिससे हमें बचना चाहिए। हमें दुख-भय समय में अपने हृदय को सात्वना देनी चाहिए। उसके बारे में फरमाया गया कि हमें उनके लिए हृदयगत भावों से शुभकामना करनी चाहिए।

उसके बाद शुभकामना सम्बन्धी एक भजन ''परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराएगें'' का गान किया गया।

इसके बाद फरमाया गया कि एक बात ही याद रख लेने से हमारा जीवन सफल हो जाएगा। हम इतना ही याद कर सकें कि अगर श्रीमान बलकार सिंह

जी भरी जवानी में बिना किसी रोग के जा सकते हैं तो हम किस बाग की मूली हैं। मौत को याद रखने का मतलब है कि हम मौत की तैयारी करके रखें कि हमें किसी समय भी इस दुनियां से विदा होना पड़ सकता है।

दूसरी बात यह है कि हम उनके गुणों को सामने लाकर उनको सच्ची श्रद्धांजलि भेंट कर सकें व उनसे लाभ उठा सकें। तीसरा उनके उपकारों व उनकी मेहरबानियां सामने लाकर उनको बार-बार याद करना चाहिए।

चौथी बात अपने व्यवहारों में उनके सम्बन्ध में यदि कोई गल्ती हुई है, तो उसके लिए क्षमा-शील होकर अपना हित कर सकते हैं। इन्हीं चारों बातों को याद करके उनके प्रति शुभकामनाएं करें।

इसके बाद हमें सोचना चाहिए कि मरने वाला कहां चला जाता है। साईंस यह बताती है कि मरने वाला मरकर मनुष्य ही बन सकता है। किसी की जीवनी शक्ति उचित हालात मिलने पर व योग्यता होने पर उस जैसा ही शरीर निर्माण कर सकती है। उसको जीवित रखती है, उसकी रक्षा करती है व एक से अनेक बनाने का कार्य करती है।

सूक्ष्म शरीर किस प्रकार बनता है उसका संक्षिप्त वर्णन किया गया।

प्रत्येक मनुष्य जीवित रहना चाहता है व मरना कोई नहीं चाहता। हम दूसरों को अच्छा बनाने से अच्छा बनते है व दूसरों को बिगाड़ने से बिगड़ते है, यह नेचर का अटल नियम है। परलोक में भी वही जीवित रह सकेगा जो नेचर के लिए विकासकारी व सहायक होगा। वह मनुष्य परलोक में नही जा सकता जो

1. धन-धरती व पदार्थो से बहुत ही ज़्यादा बन्धा हुआ हो।
2. नशे का गुलाम हो।
3. मोह, धन, सम्बन्धियों, पदवी (rank position) आदि का बन्धुआ हो।
4. जिस पर वासना का बहुत बढ़ा हुआ अधिकार हो दो चीजें आत्मा का बहुत नुकसान करती हैं। 1. मिथ्या, झूठ 2. पापाचार।

गुरू महाराज ने सत्य व शुभ के अनुरागों में विकसित होकर फरमाया है कि जो बात मेरे ग्रन्थों में भी वैज्ञानिक कसौटियों पर खरी न उतरे वह छोड़ देने योग्य है।

इसके बाद सभापति जी ने हृदयगत भावों से श्रीमान बलकार सिंह जी के गुणों का ब्यान करके उनके प्रति शुभकामना की।

उसके बाद कुछ जनों ने अपने भावों का प्रकाश इस प्रकार किया।

श्रीमान गुरदेव राज जी: मेरा इस परिवार के साथ 25 वर्षो से भी ज़्यादा सम्बन्ध रहा है। इन सब भाईयों ने जो मेरी दुःख तकलीफों व मुसीबतों में मदद की है उसका पूरा-पूरा ब्यान करना सम्भव नहीं। (आपका हृदय भरा हुआ था) श्रीमान बलकार सिंह जी के उपकारों के बारे में बताया कि किस प्रकार आप ने मेरी खेतों व अन्य कामों में मदद की व हर काम को अपना समझ कर किया है, वह अति विशेष थे परन्तु मैं अपने गर्म स्वभाव के कारण उससे गुस्से हो जाता रहा हूं। इसके लिए मैं माफी मांगता हूं। उन की ईमानदारी की घटनाओं का वर्णन किया।

श्रीमान मेहर सिंह जी: जब तक मनुष्य इस दुनियां में रहता है तो उसकी हम कदर नहीं जानते या समझ पाते। श्रीमान जी का इस दुनियां से चले जाने की खबर मिली तो मुझे इतना सदमा लगा कि दो मिन्ट तक अपनी धर्मपत्नी को बता ही नहीं सका कि श्रीमान जी गुज़र गए हैं। वह बार-बार मुझसे पूछती भी रही कि क्या हुआ है? (आपका हृदय भरा हुआ था) लाखों मनुष्य ऐसे होते हैं जो पशु level से भी नीचे जीते हैं। लाखों मनुष्य ऐसे होते है जो पशु के level पर हैं। लाखों लोग ऐसे होते हैं जो अपना काम भी करते है व दूसरों की सेवा भी करते हैं। चौथी श्रेणी में वह जन हैं जो कुर्बानियां करके दूसरे के लिए जीते हैं।

गुरु गोबिन्द सिंह जी की घटना सुनाई कि किस प्रकार उनके पिता ने कुर्बानी दी और किस प्रकार उन्होंने अपने सारे बच्चे कुर्बान कर दिए।

उनसे ऊपर भी एक level और है जो किसी सुख के लिए नहीं जीते, श्रीमान बलकार सिह जी के जीवन में गुरु महाराज का कारज हुआ है। उनका वर्णन किया व श्रीमान जी कैसे ईमानदार थे उनकी घटनाएं बताई। हम उनकी व उनके परिवार की सहायता करते रहें शुभकामना कर सकें।

श्रीमान जंगीर सिंह जीः श्रीमान बलकार सिंह जी में जो गुण थे मेरे में वह एक भी नहीं है। आप का जीवन किसी महान परोपकारी से कम नहीं था। हमारे गांव में किसी जन को जाने के लिए कोई साधन न मिलता तो आप उन्हें अपने स्कूटर पर छोड़ आते। आप अपने फायदे के लिए किसी को खराब फलों का रस नहीं पिलाते थे। दूसरों के भले के बारे में सोचते थे। आपके मुझ पर बहुत ही उपकार हैं। काश! मैं उनको महसूस कर सकूं व उनको सामने लाकर उनके व उनके परिवार के लिए कुछ कर सकूं व उनके भले के लिए शुभकामना करता रहूं।

श्रीमान सुरवदेव जीः मुझे श्रीमान जी (बलकार सिंह) जी का साथी सेवक होते हुए गर्व हो रहा है। आप अच्छे हृदय के मालिक थे। आप के हृदय में ईमानदारी पवित्रता, शुक्रगुजारी, बड़ों के लिए सम्मान व अपनी कमियों को देखने का मादा मौजूद था। मुझे वह लोग बहुत पसन्द हैं जिनके अन्दर पवित्रता हेा व मिथ्या विश्वासों से बचे हुए हों। श्रीमान जी के जीवन में यह दोनों गुण मौजूद थे। आप ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे परन्तु मिथ्या विश्वासों को लेकर दूसरों को समझाते व बहुत अच्छा logic देते थे। मुझे इस बात से बड़ी हैरानी होती थी। आप किस प्रकार एक-एक पक्ष में कीमती हीरे थे हमें गुरु महाराज का सेवक बनकर नीच शक्तियां रखकर भी हम उन मिथ्या से बचे हुए हैं जिनसे बड़े-बड़े कहलाने वाले thinkers भी नहीं बच सके।

आप के अन्दर शुक्रगुज़ारी का जो सुन्दर भाव मुझे देखने को मिलता है वह अति विशेष है। आपने मेरे सामने अपने सब भाईयों को एक-एक सूट दिया। शुक्रगुजार होने का दावा तो हममें से काफी कर सकते हैं परन्तु उसका पता Practical Life से ही लगता है। आप जिस प्रकार अपनी गलती को सामने लाकर भावुक हो उठते थे व अपने भाईयों के पैरों में भरी सभा में गिरते थे, यह कैसा सुन्दर नज़ारा था।

आप के माता-पिता के सामने हृदय झुकता है जिन्होंने आपको ऐसा हृदय दिया।

आप के ऐसे सुन्दर भावों को देखकर, सुन्दर आत्मा की जो मेरे सामने तस्वीर बन रही है उससे ऐसा लगता है कि छोटी सी भी ज़िन्दगी बहुत बड़ी होती है अगर जीवन का सही प्रयोग किया जाए। कुछ ही पलों के लिए फूल बनकर जीना, कई सालों का कांटा बनकर जीने से असख्यों गुणा बेहतर है। एक फूल की सुन्दरता इसलिए कम नहीं हो जाती क्योंकि उसकी duration कम होती है। मौत भी अच्छे हृदय की अन्दरुनी सुन्दरता को ख़त्म नहीं कर सकती।

काश! मैं उनके अच्छे व सुन्दर हृदय को हमेशा सामने रख सकूं व उनकी व उनके परिवार के भले के लिए शुभकामना कर सकूं। अगर मैं इनके परिवार के लिए अपनी योग्यता के हिसाब से किसी पहलू में काम आ सकता हूं तो अपना सौभाग्य समझूंगा।

श्रीमान जीत सिंह जीः एक भाई अपने भाई को माथा टेकता है। अगर कभी ऊंचा भी बोला गया तो मेरी बात को एक हुक्म की तरह माना गया है। आप के अन्दर कई पक्षों के लिहाज से अच्छी योग्यता थी। कुछ ही महीनों में आप की दुकानदारी के कारण आस-पास में ऐसे सुन्दर व मीठे सम्बन्ध बन गए कि आस-पास के गांव वालों ने उनकी मौत की खबर सुनकर दुकानें बन्द कर दी। माता जी व उनकी

धर्मपत्नी के दिल से क्या बीत रही है, उसकी कल्पना करनी मुश्किल नज़र आ रही है। आप ने मेरे ऊपर जो जिम्मेदारियां छोड़ी हैं क्या उनको सही तरह निभा सकूंगा? ननिहाल परिवार से मेरी बेनती है कि जल्दी-जल्दी स्नेह व प्यार जताने के लिए उनके पास आते-जाते रहें। किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं आएगी। अपनी जिम्मेदारियों को ज़्यादा से ज़्यादा निभा सकूं (रो-रो कर)। उनकी आत्मा को शांति मिले।

इसके बाद शुभ कामना सम्बन्धी भजन का गान किया गया। 'हे देह त्यागी सम्बन्धी हमारे, करें मिल कर कामना शुभ की तुम्हारे।'

इसके बाद शुभ कामना की गई। चार-बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त हुई। यहां से दान 6300 रुपए भी प्राप्त हुए। कुल जन 400 के करीब आकर शामिल हुए। इसके बाद यह पार्टी पदमपुर के लिए रवाना हो गई।

(एक सेवक)

इल्लियां क्यों सफल नहीं होती?

अक्सर लोग बातें करते हैं कि फलां आदमी की सफलता का राज उसे पता है और वह भी ऐसा करके सफल बन सकता है। हालांकि उसका ईमानदार मन इस अनुसरण के लिए राजी नहीं होता, फिर भी सफलता की चाह उसे अनुसरण करने के लिए प्रेरित करती है। इस अनुसरण में योग्यता व समझ पीछे छूट जाते हैं और आप एक पिछलग्गू बनकर रह जाते हैं, ठीक उन इल्लियों की तरह जो खाना पास पड़ा होने के बावजूद उसकी तलाश में एक-दूसरे का अनुसरण करती हैं।

इल्लियां अक्सर एक सीधी रेखा में एक के पीछे एक चलती हैं। फैंच कीटविज्ञानी जीन हैनरी फैबर ने एक बार इन रेखा में भोजन की खोज में चलती हुई इल्लियों को एक गमले के इर्द-गर्द एक-दूसरे के पीछे चलने का चक्कर बना दिया, ताकि उन्हें लगे कि वे अपने से आगे वाले के पीछे चल रही हैं। आदत वे सहज बोध के कारण सभी इल्लियां गोल चक्कर में सात दिन तक लगातार एक-दूसरे के पीछे चलती रही, जब तक थकान व भूख से मर नहीं गई। हालांकि, पास में ही पर्याप्त मात्रा में भोजन पड़ा था जो साफ नजर भी आ रहा था, लेकिन वह चक्कर के बाहर था। इल्लियों को अपना रास्ता ही ठीक लग रहा था।

हमारे समाज में लोग भी अक्सर इसी प्रकार व्यवहार करते हैं। आदतें और सोचने का तरीका अक्सर लोगों के भीतर बैठ जाता है, और यह अनुसरण करने का तरीका लोगों को नए बदलाव से अधिक बेहतर लगता है, चाहे यह बदलाव स्वतंत्रता, सफलता व ऊंचाईयों को दर्शाता हो। यदि कोई चिल्लाता है आग-आग तो अकस्मात सभी लोग भीड़ के पीछे भागने लगते हैं और हज़ारों लोग अकारण ही मारे जाते है। कितने लोग स्वयं से यह पूछने के लिए रुकते हैं कि क्या यह यहां से निकलने का सबसे सही तरीका है? बहुत-से लोग भंवर में फंसकर दूसरों की तरह बिना प्रयास किए डूबने लगते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है जब सब डूब रहें हैं तो वे कैसे बचेंगे। यह खुद को कमजोर बनाने का बड़ा आरामदायक तरीका है, सो हम अपने विचार और सामने वाले की योग्यता को बिना जाने अंधानुसरण करते रहते हैं।

अधिकांश लोगों के लिए सबसे मुश्किल बात यह है कि इतने सारे लोग गलत भी हो सकते हैं, उन इल्लियों की तरह जो गमले के गोल-गोल घूम रही थी। उन्हें लगता है कि इतने सारे लोग यह कर रहे हैं तो यह सही ही होगा। थोड़ा और करें तो इतिहास में ऐसे बहुत से तथ्य मौजूद हैं जो हमारे समाज में इल्लियां होने की ओर इशारा करते हैं।

सत्य मोक्ष और जीवन दायनी देव गंगा

हरिद्वार के रेलवे स्टेशन पर सैकड़ों हिन्दु यात्री प्रति-दिन उतर रहे हैं। स्त्रियों और पुरुषों के झुण्ड के झुण्ड हरि की पौड़ियों की ओर जा रहे हैं। उन में से कोई- कोई जन अपेक्षाकृत बहुत निकट के स्थानों से, और कोई बहुत दूर के स्थान से आए हैं। कोइ पांच वा दस कोस से और कोई पचास, पांच सौ और हज़ारों मील से आए हैं। दूर-2 के एक-2 यात्री ने यहां तक पहुंचने में जितना कुछ कष्ट उठाया है, जितना धन खर्च किया है, जितना परिश्रम किया है, उसे सब वह गंगा तट पर पहुंचकर सफल समझता है। क्यों? गंगा जी के दर्शन से, और उस से भी बढ़कर उस में डुबकी लगाने से। अब वह गंगा जी के दर्शन करके बहुत प्रसन्न है; और यदि यहां पर पण्डे उसे कलेश न दें, तो वह और भी अधिक हर्षित हो सकता है। परन्तु इस प्रकार हर्षित होने के अन्नतर क्या उसके भीतर कभी यह प्रश्न उदय होता है, कि मैं गंगा स्नान के लिए क्यों आया? और इस स्नान से मुझ में क्या विशेषता आ गई? काशी जी वा कानपुर में रहकर जब मैं गंगा स्नान करता था, और अब यहां आकर जो मैंने गंगा स्नान किया, इन दोनों में कौन सा अन्तर है? गंगा के स्नान और किसी और नदी और कुंए और तालाब के स्नान में क्या अन्तर है? मैं इतने दिन जिस कुएं वा तालाब वा नहर के जल से नहाता रहा हूं, उसकी अपेक्षा यहां हरिद्वार में ''हरि की पौड़ियों'' के स्नान से मुझे अधिक क्या मिला? क्या यह सच नहीं, कि वहां जैसे जल के द्वारा मैं अपने शरीर के मैल को धो सका था, यहां भी केवल शरीर की ही मैल को धो सका हूं; उस से अधिक कुछ नहीं? वहां जैसे प्रति दिन के स्नान से मेरे आत्मा के कभी कोई पाप नहीं कटे, यहां भी नहीं कटे? मैं तो यहां थोड़े दिन के लिए आया हूं, जो यहां के रहने वाले हैं, उनकी अवस्था ही क्या है? यह प्रश्न साधारण नर नारियों के मस्तिष्क में तो क्या उदय हो सकते हैं, अनेक पढ़े-लिखे और सुशिक्षित जनों के भीतर भी उत्पन्न नहीं होते। वह केवल अन्ध संस्कार के पीछे चल रहे हैं। अन्य संस्कार उन्हें लाठी लिए हुए चला रहे हैं। और वह अन्धे होकर उसके पीछे चल रहें हैं। आत्मा क्या है? शरीर क्या है? दोनों का सम्बन्ध क्या है? शरीर के रोग क्या हैं? शरीर किन रोगों से क्षय को प्राप्त होता है? आत्मा किन रोगों से विनष्ट होता है? शरीर के रोगों की औषधि क्या है? आत्मा किस की और कैसी औषधि से बचता अथवा परित्राण पाता है? शरीर की पुष्टता किस आहार से होती है? आत्मा किस आहार के मिलने से रहता और उन्नत होता है? वह आहार क्या है और कहां से मिल सकता है? यह महा हितकर प्रश्न इन यात्रियों के भीतर उत्पन्न नहीं होते। हां, जीवन तत्व विषयक ज्योति से विहीन लाखों और करोड़ों-मूर्ख और विद्वान-स्त्री और पुरुषों की कैसी दुर्दशा! कैसी कृपापात्र अवस्था!! तब कितना सौभाग्य है उनका जिन को जीवन विषयक आत्म- ज्ञान की महा हितकर ज्योति लाभ हुई हो और जिन का ऐसी ज्योति के भण्डार से कोई जीवन्त और सच्चा सम्बन्ध स्थापन हुआ हो, और उन्हें जीवन सम्बन्धी अन्धकार से निकलकर जीवन के उच्च पथ पर पड़ने का अवसर मिला हो।

(लेख उपदेश)

शुभ संग्राम

संगरुरः – 20 अक्तूबर को श्रीमान बलदेव सिंह जी चण्डीगढ़ से संगरुर पहुंचे। रात को श्रीमान सीताराम जी के सारे परिवार को लेकर सभा कराई। इस सभा में बताया कि कैसे शराब के नशे में अन्धा होकर मनुष्य अपने ही परिवारिक जनों को मार देता दै। हम सब ही एक या दूसरे नशे के गुलाम हैं। हमें देवात्मा के दर से जुड़कर लाभ उठाना चाहिए, पर हम अपने संसारिक काम धन्धों में ही उमर गंवा देते हैं और आध्यात्मिक तौर से मालामाल होने से वंचित रह जाते हैं। सब को अपने सम्बन्धियों समेत महोत्सव पर पहुंचने की प्रेरणा की गई।

अगले दिन दुपहिर के बाद श्रीमान जी डबवाली पहुंचे।

<u>डबवाली</u> यहां 7 बजे सभा की गई, जिसमें 20–25 स्त्री पुरुष शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि धर्म की क्या आवश्यकता है? क्या इसके बिना काम चल सकता है। इस सभा में सब अच्छे पढ़े लिखे जन थे, जिन्होंने बहुत दिलचस्पी दिखाई।

22 तारीख़ को सुबह 9 बजे सभा रखी गई। इस सभा में पूछा गया कि घड़ी को कौन चलाता है? कार को कौन चलाता है? फिर पूछा गया कि मनुष्य को कौन चलाता है? आगे बताया गया कि मनुष्य की सुख लालसाएं मनुष्य को चलाती हैं, सुखों के आकर्षण वा भाव चलाते हैं, अधिकतर मनुष्य को नीच सुख चलाते है, जो उसकी बर्बादी लाते हैं। मनुष्य अपने आप अपने चालक भावों को न जान सकता है और बच सकता है। गुरु महाराज मनुष्यों को उनके चालक भावों को दिखाते हैं और नीच भावों की पकड़ से उनको छुड़वाते हैं। बहुत प्रभावशाली परिवर्तन सुनाए गए। सरदार हरनाम सिंह जी के जीवन के विषय में बताया गया।

इस प्रकार यहां संग्राम कुछ सफल हुआ और आशा होने लगी है कि यहां भी लोग धीरे–धीरे लाभ उठाएंगे।

थराजवाला :– दुपहिर बाद श्रीमान जी यहां पहुंचे और सबसे पहले पुराने साथी सेवक हरदयाल सिंह जी के घर जाकर उनके घर वालों से उनका शोक प्रगट किया फिर सब श्रद्धावानों को मिले। सब को सभाओं का पता दिया। रात को 8 1/2 बजे श्रीमान बलदेव सिंह जी और उनके बच्चों को लेकर सभा करवाई। सभा में बताया गया कि कुदरत के नियमों को जानना और उनको पूरा करना बहुत बड़ा सौभाग्य है। जिस प्रकार सैर के नियम पूरे करने से लाभ है, उसी प्रकार संगत में आने के भी बहुत लाभ हैं। उदाहरणों द्वारा यह तथ्य साफ किया।

23–10–05 को श्रीमान बलदेव सिंह जी ने श्रीमान बलवन्त सिंह जी के घर सभा करवाई और बताया कि सच्चे सुख वा भलाई का मार्ग गुरु महाराज ने बताया है। बड़े–बड़े राजपाठ के मुकाबले में गुरु महाराज के साथ जुड़ना बेशुमार कीमती सौभाग्य है। उनकी पैदा की हुई संगत में बैठना बहुत कीमती चीज़ है। संगत से जुड़ने की प्रेरणा की गई।

23 तारीख़ की रात को फिर सभा की गई इसमें बताया गया कि किस प्रकार इन्सान घर–2 दुखी हैं, दुनिया के धर्म बताते हैं कि परमात्मा, देवी देवताओं का ध्यान करो तो दुख और पाप का नाश हो जाऐगा। गुरु महाराज बताते हैं कि तुम्हारे दुखों के कारण, तुम्हारे अन्दर के सुखों में हैं, उनको जानों, उनसे मुक्त होवो, गुरु महाराज हमारे भीतर के दुखों के कारणों को दिखाते हैं, अपनी शक्ति के द्वारा उन्हें मिटाते हैं, जाप, पाठ इसका ईलाज नहीं है। तेज सिंह और दर्शन सिंह जी ने 100–100 रु० दान में दिए।

24-10-05 यहां 10 बजे लोकल सीनीयर सैकण्डरी स्कूल के 20 के करीब अध्यापिकों और अध्यापिकाओं को लेकर एक सभा करवाई। उनसे प्रश्न पूछ कर, उनके सन्तोषजनक उत्तर देकर उन्हें समझाया गया। मुख्य विषय था कि इन्सान को कौन चलाता है। अध्यापिक बहुत प्रभावित हुए, उन्हें 30-35 के लगभग पुस्तकें भी दी गई। यह संग्राम काफी लाभदायक रहा।

गोनियाना मण्डी:- शाम को यहां पहुंचकर सभा की गई। मुख्तियार सिंह जी महिमा सवाई से और प्रीतम सिंह जी नेहीयां वाले से आ गए। यहां बताया गया कि ज्ञान के बिना मनुष्य खतरे में रहता है। मनुष्य अपनी चालक शक्तियों से अज्ञानी रहकर बहुत बड़े ख़तरे में है। गुरु महाराज यह ज्ञान देते हैं और इस खतरे से बचाते हैं। यह सभा 2 घण्टे तक ज़ारी रही।

24-10-05 सुबह 8 बजे सभा की गई, इसमें बताया गया कि किस प्रकार देवात्मा का सम्बन्ध मनुष्यमात्र के लिए Indespensible है अर्थात अति अवश्यक है। जिस प्रकार हवा, पानी के सम्बन्ध के लिए बिना हम जीवित नहीं रह सकते, हानि और नाश को प्राप्त हो जाएंगे, देवात्मा के सम्बन्ध के बिना हम विनाश और दुखों में घिर जाते हैं, यह सम्बन्ध हमें हमारी मुख्य वस्तु आत्मा को दिखाता हैं। दुखदाई वा विनाशकारी शक्तियों को दिखाता हैं, उनसे मुक्त करता और जीवन वर्द्धक भावों को पैदा करता है।

रात की सभा में बताया गया कि नेक बनना ही धर्म होता है, जिसका जीवन अच्छा नहीं, जिसका व्यवहार अच्छा नहीं वह धर्मवान नहीं। नेक बनने के लिए मोटे पापों को छोड़ना अवश्यक हैं, ईमानदार व पवित्र बनना अवश्यक है, इसके उदाहरण दिये गए। केवल बाणी पढ़ने या जाप करने से धर्मवान नहीं बना जाता। गुरु महाराज अपने प्रभावों से अधिकारी जनों को नेक इन्सान बनाते हैं।

26.10.05 भी सुबह की सभा आख़री सभा थी। इसमें बताया गया कि सब मनुष्य कैदी हैं। गुलाम हैं। मनुष्य चार चीजों का गुलाम है, संग, संस्कार, अभ्यास और नीच लालसाएं। उपरोक्त गुलामी के कारण हमारी, बोली, वेषभूषा, रहन-सहन, रस्में, रिवाज, विश्वास, धर्म, पूजा दुआ आदि होते हैं। कैद का जीवन गुलामी का जीवन होता है। हम उस दायरे से निकल कर सोच ही नहीं सकते। अपनी उपरोक्त सब बातों के घेरे में ही उलझे रहते हैं। अपनी ही इन बातों को ठीक समझते हैं, इसीलिए इन बातों को लेकर दूसरों से टकराते हैं और हानि उठाते हैं। गुरु महाराज योग्य मनुष्यों को उपरोक्त कैद से मुक्त करते हैं, इस अवसर पर 310 रु० दान में प्राप्त हुए, 200 रु० चन्दा अख़बार प्राप्त हुआ।

इस प्रकार यहां का संग्राम काफी सफल रहा।

कल्याण 26.10.05 की शाम को कल्याण पहुंचकर एक सभा रखी गई। देवात्मा के दर से जुड़ने की बरकतें बताई गई। और दूर रहने के घाटे को बताया गया।

27 तारीख सुबह की सभा में बताया गया कि दुनियां में दुखों को तुफान है। दुखों को दूर करने के लिए विद्या, धन, पदवी, ताकत आदि सहायक नहीं हो सकते। दुख अपने अन्दरुनी दोषों के कारण होते हैं, जो नज़र नहीं आते। यह दोष गुरु महाराज की रोशनी में नज़र आते हैं और अधिकारी आत्माओं का इनसे छुटकारा होता है और उन्हें उचित सुख प्राप्त होते हैं।

रात की सभा में अच्छी हाज़री थी। इसमें बताया गया कि हमें दूसरों के दोष तो नज़र आ जाते हैं। अपनी कमीयां, अपने दोष बिल्कुल नज़र नहीं आते। दूसरों के लिए अपमान और उन्हें पहुंचाए दुख हमें याद नहीं आते। इस अन्धेरे में हमारी आत्मा के जीवन की हानि होती रहती हैं।

28.10.05 की सुबह की सभा में बताया गया कि मनुष्य के दुखों को घटाने के लिए शुक्रगुज़ारी अवश्यक हैं। प्रत्येक मनुष्य का दुखी होना, डिपरैशन में जाना स्वभाविक है, पर दूसरों के उपकारों को स्मरण

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

करके हम अपना दुख घटा सकते हैं। इससे हमें सुख को उच्च रस मिलता है। इसी से धर्म आता है। श्रीमान जी ने अपने ऊपर हुए उपकारों का वर्णन भरे दिल से किया आर बार-2 महाराज के आगे झुकते रहे। इसके बाद कुलदीप सिंह जी ने अपने माता पिता व अध्यापिकों के उपकारों का वर्णन किया। बहुत हितकर वातावरण बना। सबको प्रभावित होने का अवसर मिला।

रात की सभा में एक जन बरनाले से आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि गुरु महाराज मनुष्य को सम्बन्धों में जीना सिखाते हैं। सम्बन्धों में हितकर मेल लाते हैं, उसके ढंग समझाते हैं। सच्चा प्रणाम करना, गुणों को देखना और उनके आगे झुकना, मेहरबानियों को याद करना और उसे ऋण की न्याईं अनुभव करना, उनके दुखों में दुखी होना अपनी ग़ल्तियों के लिए क्षमा मांगना, यही सब बातें हमे जीने का सही मार्ग दिखाते हैं। गुरु की छवि को प्रणाम करके बार-2 धन्यवाद देना चाहिए।

29.10.05 की सुबह को आख़री सभा की गई। इसमें बताया गया कि मनुष्य आंखें, बुद्धि व विद्या रख कर, पदवी प्रभुत्व रखकर भी अन्धेरे में हैं। हाजरीन से प्रश्न करके इस बात को स्पष्ट को किया। धन की महानता समझकर भी हम अन्धेरे में हैं। इसकी गुलामी ईलाज करवाने नहीं देती। कमाई के साधनों के विषय में कैसा अन्धेरा है। यह विषय काफी दिलचस्प बन गया। सभा में न आकर धन कमाना ही लक्ष्य रखना भी अन्धेरा है। हानि कारक चीजों की बिक्री में लाभ महसूस करना यह सब अन्धेरे की बातें हैं। निज का साधन करने की प्रेरणा दी गई।

<u>मोगा</u> यहां शाम को 2 परिवारों को लेकर सभा करवाई। इसमें मनुष्य की परिचालिक शक्तियों के विषय में रोशनी डाली गई। इनका ज्ञान न होकर मनुष्य ख़तरे मे रहता है। अपने आप अपनी परिचालक शक्तियों को देखने में मनुष्य असमर्थ है। पू० भगवान की ज्योति में ही यह सोझी प्राप्त होती है।

30.10.05 सुबह की सभा में 3 परिवारों के 8 जन आकर शामिल हुए। मनुष्य में कई प्रकार के अन्धेरे हैं। व्यायाम के सम्बन्ध में विद्या के सम्बन्ध में, उसके विषयों के सम्बन्ध में अन्धेरा हैं। अपने लक्ष्य के सम्बन्ध में अन्धेरा है, आत्मा के सम्बन्ध में अन्धेरा है, इन विषयों को विस्तार से समझाया गया। सब ने काफी लाभ उठाया है, और बार-2 आने के लिए प्रार्थना की।

समराला:- इस स्थान पर श्रीमान जी ने शाम के वक्त एक सभा श्रीमान नायब सिंह के परिवार को लेकर सभा करवाई। एक लैडी टीचर और भी शामिल हुई। सभा में मनुष्य के अन्दर विद्या, बुद्धि, पद, प्रभुत्व और अनुभव होने के बावजूद भी बहुत अन्धकार रहता है। अपने आत्मा और स्वभाव के प्रति तो सारा संसार ही प्राय अन्धकार में रहता है। सब ने सभा से दिलचस्पी महसूस की और बार-बार शीघ्र आकर साभाएं रखने के लिए प्रार्थना की। इसके बाद श्रीमान जी चण्डीगढ़ के लिए वापिस आ गए।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*